आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2017-2019

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 4 | अंक 18 | उदयपुर मंगलवार 01 अक्टूबर 2019 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

गांधी : लोकमन का एक ही कल्प-विकल्प

-डॉ. महेन्द्र भानावत-

गांधी ने चरखा दिया जैसे जीवन दिया। चर-चर कर खाने का यह अमोघ मंत्र जीवन में पुरुषार्थ और स्वावलंबन के माध्यम से स्वाधीन चेतना को जन्म देता है। चरखे का तार-तार जीवन की सार-सार डोरी है। रूई धुनती है। अच्छी धुनी हुई रूई से अच्छा तार निकलता है उसी तरह कर्म-कसौटी पर जीवन कसता है तब पसीना-पसीना तार-तार निकलता है। उधर तार-तार की कुकड़ी तैयार होती है। इधर पुरुषार्थ का पौरूष पराक्रम जीवन को नाना ज्ञान-विज्ञानादि अनुभवों की कुकड़ी में बुनता चलता है। यही सच्चा जीवन है। इसी जीवन में ताल है, लय है, गति प्रगति और मति रति है।

कृष्ण तो जेल में पैदा हुए मगर गांधी का तो घर ही जेल हो गया। कृष्ण ने मधुर मुरली बजाई तो गांधी ने मस्ताना चरखा चलाया। कृष्ण माखन चोर कहाये तो गांधी नमक चोर। गांधीजी शान्ति की खोज में कभी हिमालय नहीं भटके। वे सारे देश में पूरे लोक में शान्ति चाहते थे। अपनी मृत्यु के एक दिन पूर्व 29 जनवरी 1948 की प्रार्थना सभा में उन्होंने कहा था- मैं शान्ति तो चाहता हूं मगर हिमालय जाकर नहीं। मेरा हिमालय यहां है। मैं अशान्ति में शान्ति चाहता हूं। नहीं तो उस अशान्ति में मर जाना चाहता हूं।

गांधी लोकमन का कल्प मनुष्य था। एक ऐसा कल्प जिसने न केवल आजादी ही दिलाई अपितु अपाहिजों, अन्त्यजों और आततायियों को एक भरोसा, संबल, सहारा, सब्र, सांत्वना और वह सब कुछ दिया जिसकी उन्हें चाह थी। क्या कारण है कि कोई भी महापुरुष लोकमन में उतना गहरा नहीं पैठ पाया जितना गांधी बाबा पैठा। क्यों गांधी इन सबका एक ही विकल्प बना! इन सबका ही नहीं आज पूरे राष्ट्र की हर हालत, हालाता और हवालात का विकल्प भी एक ही गांधी दिखाई दे रहा है।

गांधी ने कभी अपने को महान नहीं बताया। न वे अपने मन में इस बात की गठरी बांधे चले कि लोग उन्हें महामानव कहें और उन्हें ईश्वर स्वीकारें। उन्होंने अपने को सदा सहज मानव ही बनाये रखा। इसीलिये वे सबके मन में सहजतापूर्वक पैठ गये। गांधी कहां-कहां नहीं पहुंचा! मैंने एक गड़रिये से पूछा- 'गांधी कौन था!' नाम सुना? उसने कहा- 'नाम खूब सुना। वह बकरियां चराता था।' मैंने एक हरिजन बालिका से पूछा- 'गांधीजी का नाम सुना! वे कौन थे?' उस बालिका ने अपनी आधी मुस्कान में अपने पास पड़ा झाड़ू छूते हुए कहा- 'गांधीजी झाड़ू लगाते थे।' सड़क पर जूते गांठने वाली चमारिन से पूछा- 'गांधी का नाम सुना! कौन थे वे?' उसने कहा- 'वे बहुत बड़े आदमी थे। उन्होंने जीवों की रक्षा की।'

आजादी के इतने बरस बाद भी गांधी की गंध किन-किन रंगों में कितने अच्छे रूप में गंधिया रही है। जीवन का मूल मंत्र तो कर्म है और कोई भी कर्म किया जाय उसके साथ सद्निष्ठा का भाव आवश्यक है। गांधी ने कर्म के प्रति यह जो भाव दिया वही किसी के जीवन की सबसे बड़ी कमाई है। गड़रिये ने गांधी को गड़रिया माना। गांधी उसके लिए अपने काम और कमाई के प्रति समर्पण भाव का प्रतीक हो गया।

हरिजन बालिका के लिये तो झाड़ू ही परमेश्वर है। गांधी ने उस बालिका को झाड़ू की चिंतना में न केवल उसकी आजीविकामय जीवनी दी अपितु कर्ममय जीवन का ईश्वरत्व दे दिया। चमारिन को जूतों की हर गठान में एक यह सबक दिया कि जान सभी को प्यारी है। किसी भी जान को बेजान बनाना अपराध है पर यदि कोई बेजान हो गया तो उसके द्वारा यदि कोई जानदार कृति-कर्म किया जाता है तो वही जीवन की सार्थक गठान है।

गांधी ने चरखा दिया जैसे जीवन दिया। चर-चर कर खाने का यह अमोघ मंत्र जीवन में पुरुषार्थ और स्वावलंबन के माध्यम से स्वाधीन चेतना को जन्म देता है। चरखे का तार-तार जीवन की सार-सार डोरी है। रूई धुनती है। अच्छी धुनी हुई रूई से अच्छा तार निकलता है उसी तरह कर्म-कसौटी पर जीवन कसता है तब पसीना-पसीना तार-तार निकलता है। उधर तार-तार की कुकड़ी तैयार होती है। इधर पुरुषार्थ का पौरूष पराक्रम जीवन को नाना ज्ञान-विज्ञानादि अनुभवों की कुकड़ी में बुनता चलता है। यही सच्चा जीवन है। इसी जीवन में ताल है, लय है, गति प्रगति और मति रति है।

चरखे ने कितनी असहायों विधवाओं को जीवन दिया। बुझते मन को जलती ज्योति दी। अविराम आराम दिया है। मेरे गांव कानोड़ में ही मैं अपने बचपन से देखता आ रहा हूं- हर महिला ने चरखा काता है। कई विधवाओं का तो चरखा जीवन का आधार बना और आज भी बना हुआ है। कई माताओं ने चरखे की कमाई में अपने बच्चों को पढ़ाया-लिखाया है। मेरी मां ने भी हम दोनों भाइयों को चरखा कात कर पढ़ाया। यदि वह चरखा घर-घर प्रवेश नहीं करता तो कितनों का जीवन अंधेरा ले डूबता!

गांधीजी दरसण दे गया
घणा दनां में आया गांधीजी आया गांधीजी
घर-घर चरखा चलाय।। गांधीजी..।।
रेंट्यो तो है रंगरंगीलो रंगरंगीलो
ताण्या है लाल गुलाल।। गांधीजी..।।
वायल मुलमुल छोड़ दो
गांधीजी छोड़ दो गांधीजी
करलोनी खादी रो वेपार।। गांधीजी..।।

गांधीजी के संबंध का यह गीत ब्याह शादियों में मेरी मां ने बहुत गाया है। पुरानी महिलाएं आज भी गा लेती हैं पर जब मैं अपनी मां को पूछता कि ये गांधीजी कौन थे तो वह उत्तर नहीं दे पाती पर यह जरूर कहती कि उनके चरखे ने मेरी मां को और उसके दोनों बच्चों को अनाथपन से उबारा है। उन घड़ियों को जब मां याद करती तो मुझे लगता उसके रेंटिये (चरखे) का एक-एक तार उसके डड़वे-डड़वे आंसू से भीगकर भारी होता जाता।

तेलगु में भी यह गांधी-चरखा और पूनी इसी प्रकार प्रत्येक घर की शोभा बन गई। उधर प्रचलित एक लोकगीत में कहा गया, हे पुत्रियों! चरखा कातो। गांधी की जयकार करते हुए सूत के तार निकालो। पूनी और चरखा तो घर की शोभा है-

राटमु ओड़कारम्मा ओ अम्मालारा
गांधी की जय अंचु दारामु तीयारे
एकुलु राममु इन्टिकन्दम्भू
महात्मा गांधी प्रजल कन्दम्मू।

तमिल के एक लोकगीत में तो गांधीजी को एक रक्षक बताया और उन्हें ऋषि महाऋषि से सम्बोधित किया- गांधी ऋषि काप्पात्तुं महाऋषि गांधी ऋषि।

गांधी ने कहा- मैं भारत के अनाथ बच्चों के लिए चरखा कातता हूं। राजस्थान में तो अकेले चरखे को लेकर कई लोकगीत सुनने को मिलते हैं। एक गीत में तो चरखे को कातने वाले गांधी बाबा का उल्लेख तक आ गया है जो खद्दर पहन बैठे हैं और महीन-महीन पूनी का लम्बा-लम्बा तार निकाल रहे हैं।

चाल रे चरखला हाल रे चारखला
ताकू तेरो सोवणो लाल गुलाबी माला
चरकूं मरकूं फिरै घेरणी मधरो मधरो चाल....
गड्डी तेरी रंगरंगीली तकली चक्करदार
चोखो बरायो दमकड़ो तेरो कूकड़िये री लार....
कातणवाले गांधीबाबा बैठे खद्दर धार
महीं-महीं वी पूणी कातै लंबो काढ़ै तार....

उधर बाड़मेर-जैसलमेर के रेतीले अंचल में तो चरखा पूरे परिवार को ढकेलने वाला बन गया है। लंगों-मांगणियारों के इस लोकगीत में -

घूम रे चरखा घूम
म्हारो अंग ढकेला थूं
म्हारी नथड़ी रो मोती थूं

को लंगा गायक नूर मोहम्मद ने इतना प्रचारित किया और प्रियता प्राप्ति की कि जहां-जहां भी उन्हें गाना होता, इस गीत को बड़ी तबीयत से गाते और सर्वाधिक फरमाइश भी इसी गीत की होती। अपने विदेश प्रवास में भी उन्होंने इस गीत के पीछे बड़ा यश-सम्मान अर्जित किया।

राजस्थान के इन गीतों में चरखे को लेकर जो नखशिख और उसकी आत्मरंगीनी व्यक्त की गई वैसी अन्य प्रान्तों में देखने-सुनने को नहीं मिलेगी। लंगा बंधु इस चरखे गीत में इतने तन्मय हो जाते कि एक शाश्वत संगीत और स्वर्गीय आनंद की साक्षात् अनुभूति होने लगती। गांधी के चरखे की कितनी महिमा है! कितना माहात्म्य है! कितनी महक, कितना ममत्व और मोल है!

लोकमन कितना बली और आत्मविश्वासी होता है। इसके बल के आगे सारे के सारे भौतिक बल कुछ नहीं हैं। यहां के समग्र लोक ने तो गांधीजी की स्वतंत्रता की लड़ाई की बहुत पहले ही भविष्यवाणी कर दी थी कि चाहे कितना ही कोई उपाय किया जाय अंग्रेज कभी जीत नहीं पायेंगे। हम तो चरखा चला-चलाकर स्वराज्य लेंगे, हमारा कोई क्या कर लेगा!

- शेष पृष्ठ सात पर

खोज-खबर

भिखारीनाथजी का मठ

उदयपुर के भूपालपुरा-सेन्टपॉल के पास की ऊंची टेकरी पर भिखारीनाथजी का मठ स्थित है। इसके चारों ओर का इलाका अब मठ नाम से जाना जाता है। पास की हाई-वे सड़क कलेक्ट्री की ओर जाती है। मठ नाम चर्चित होने से भूपालपुरा-कृष्णपुरा-न्यू भूपालपुरा की सवारी यहां उतर जाती है। मेरा निवास भी इधर ही है।

तब प्रत्येक की जबान पर भिखारीनाथजी का मठ चढ़ा हुआ था। बाद में संक्षिप्तीकरण होता गया और अब केवल मठ नाम चर्चित है।

मैंने मठ पर निवास कर रहे भिखारीनाथजी से 20 दिसम्बर 1972 को भेंट की। मठ के सम्बन्ध में जानने की जिज्ञासा थी। वे धूणी पर बैठे हुए थे और बड़ी जानकारी लिये थे। उन्होंने बताया कि मठ-आसन-स्थान नाम जुदा-जुदा हैं पर सब एक ही हैं। ये सब दूर-दूर तक सब ओर पूरे देश में हैं। कहीं धूणी है। कहीं आसन है तो कहीं स्थान है।

मेवाड़ में गंगापुर के लादूवास, निम्बाहेड़ा के आंक्या, देवगढ़ के आंजणा, ठीकरवास, बड़ी-छोटी सोपरी, आमेट, दांतड़ा, मिंयाल में स्थान हैं। जरगाजी, महाकालेश्वर, खड़गजी, नारामंगरा में धूणी है। सब जगह राज्य द्वारा प्रदत्त जागीरी लगी रहती है।

उदयपुर के मठ पर 300-400 वर्ष पूर्व धूणी डाली गई थी। भिखारीनाथजी के गुरु धरतीनाथजी थे जिनकी पोस्ट ऑफिस के पास समाधि है। ये पुरोहित के लड़के थे। तंत्रबल के धनी थे। एकबार किसी मृतक को जीवित कर दिया। जागीरी महाराणा संग्रामसिंह (प्रथम) से पूर्व की है। भिक्षा के लिए जाने से भिखारीनाथ नाम हो गया।

दूर-सुदूर में पायधुनी बम्बई, नासिक के त्रिमुख गोदावरी, मैसुर के हांडी भद्रंग, बत्तस राला, हरद्वार, रोहतक, पंजाब में बोहर, कश्मीर श्रीनगर, पठानकोट, कलकत्ता और दिल्ली में तो अनेक स्थान हैं।

उदयपुर के माछले मगरे पर एकबार नाथजी ताप रहे थे। उधर से फकीर खड्ग लेकर जा रहा था। उनको लगा कि खड्ग चोरी चली जायेगी सो रोका और वहीं उसकी स्थापना की। प्रति नवरात्रा वहां उस खड्ग की पूजा होती है। नौ ही दिन नाथजी वहीं रहते हैं। नाथजी द्वारा ही मेवाड़ राज्य दिया माना जाता है। उस फकीर की भी वहां समाधि है। फाटक के पास लोटणमगरी पर महादेव की समाधि है। मेवाड़ में लादूवास सबसे बड़ी जागीरी थी। वहां खेजड़ी के पास निशान हैं।

योगी उच्चवर्ण वाले को बनाते हैं। कान में मुद्रा शिवजी का रूप है। भैरूनाथ कोतवाल है। उसके आराध्य शिवजी हैं। भैरू शिवजी का गण है। नाथ घरबारियों के भाट हैं। घाटेनाके को मानते हैं। मेलों में इनका सम्मेलन होता है। वहीं चुनाव होता है। कदलीवन में बड़ा स्थान है। आठ माह देवता हाथ में ले पैदल चलना पड़ता है। नाग पंचमी के पहले कुम्भ से चलकर शिवरात्रि के पूर्व कदली पहुंचते हैं। बहुत से जोगी साथ में होते हैं। कदली में बारह वर्ष के लिए राजा बनाते हैं। नाथ बाबे पुष्कर मेले में हर वर्ष इकट्ठे होते हैं। वहां जोधपुर वाले के महलों में मानसिंहजी ने स्थान अर्पण कर रखा है।

महाराणा का रेल चलैया

गाड़ियों के कई नाम। कोई गाड़ी ऐसी नहीं जिसका चालक नहीं। बैल गाड़ी, घोड़ा गाड़ी, ऊंट गाड़ी, बकरा गाड़ी, छकड़ा गाड़ी, जेबरा गाड़ी, मोटर गाड़ी, खटारा गाड़ी और रेल गाड़ी।

मेवाड़ राज्य की, दरबार की रेलगाड़ी सदा ही स्पेशल, शाही गाड़ी रही। इसको चलाने वाला चालक भी बड़ा भाग्यशाली रहा। कहता रहा, पूर्वजन्म में अच्छे कर्म किये सो मैं महाराणा का, राज दरबार का, रेल चलैया बना। यह महाराणा का आशीर्वाद ही रहा कि कभी कोई गलती नहीं हुई। कभी कोई धोखा नहीं हुआ। मैं और मेरा इंजन कभी बीमार हुआ।

इकबाल सागर ने बताया कि चालक अमीर खां पठान अमीर दिल का ही था। कहता- ''रईस तो महाराणा थे पर मैं जब इंजन चलाता तो रईस दिल ही बना रहता। गाड़ी चलाते कई बार कल्पना में रहा कि जैसे इंजन क्या चल रहा, चेटक चल रहा है, हवा में बहता, हवाबाज ही लगता।''

अमीर खां महाराणा फतहसिंह के बाद महाराणा भूपालसिंह के समय भी ड्राईवर रहा। बड़ा विश्वसनीय, ईमानदार तथा नेकनियत का पक्का था। उसने जातपांत का कोई लफड़ा नहीं पाला।

खासियत यह थी कि लोग सब कजोड़जी कहकर बुलाते। कब कैसे कहां किस घड़ी वह कजोड़जी बना, उसे भी मालूम नहीं पर उसकी जोड़ का दूसरा कोई नहीं था सो अजोड़ होते-होते वह कजोड़ बन गया। कजोड़जी को इंजन ने कभी धोखा नहीं दिया। चलाने का कोई प्रशिक्षण नहीं लिया पर इंजन की नस-नस से परिचित कजोड़जी ने अपनी कला से किसी बला का सामना नहीं किया।

नई रेल लाइन बनी तो उस पर इंजन भी पहलेपहल कजोड़जी ने ही चलाकर उद्घाटन किया। मावली-बड़ीसादड़ी, उदयपुर-मारवाड़ और उदयपुर-अहमदाबाद लाईन पर गाड़ी चलाकर, शुरूआत कर कजोड़जी फूला नहीं समाया।

लोग कहते, पढ़ाई कर लेता तो मजा ही कुछ और होता। इस पर कजोड़जी कहता, पढ़े-लिखे तो महाराणा फतहसिंह भी नहीं थे पर उन्होंने बड़ा नामी राज किया।

एकबार एक अंग्रेज ने कजोड़जी से कहा, तुम्हारी बहुत तारीफ सुनी पर क्या तुम मेरी कार की बराबरी में अपना इंजन दौड़ा सकते हो? कजोड़जी ने हां कह उदयपुर से देबारी तक की दौड़ रखी। देबारी स्टेशन पर कार से पहले इंजन पहुंचा तो उसने कजोड़जी की पीठ थपथपाई और इनाम दिया।

धूलंडी पर रंग खेलते-खेलते कजोड़जी के दोस्तों ने जो गीत-पंक्तियां लिख गाई उसे बाद में भी कई कई लोगों के मुंह से मैंने सुनी-

छुकपुक गाड़ी / वीमें बैठी लाड़ी।
धीरे चलाजे कजोड़ / थारी नी है होड़।
वींदणी उचके / जूं फदके पाड़ी। - **म.भा.**

पोथीखाना

साहित्यकारों एवं स्वतंत्रता सेनानियों पर खबर देती पुस्तकें

राजस्थान का ब्यावर नगर किसी समय रूई-ऊन की मण्डी रहा। फिर कपड़ों की मिलों के कारण जाना गया। यह क्रान्तिकारियों का आश्रय स्थल भी रहा। क्रान्तिकारी राजू रावत को यहां फांसी भी दी गई। अब तो सीमेन्ट के कारण देशभर में प्रसिद्ध है।

यहां साहित्य सृजन करने वाले भी हुए किन्तु उनके सम्बन्ध में अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं है। यहां के प्रसिद्ध साहित्यकार प्रो. जगमलसिंह ने हाल ही में बड़े परिश्रम से मुहम्मद कुरैशी 'निर्मल' के सहयोग से ब्यावर साहित्य व्योम के कतिपय नक्षत्र नाम से एक अच्छा संग्रह प्रकाशित किया।

मास्टर अब्दुल गनी मेमोरियल साहित्य एवं शोध संस्थान से प्रकाशित सवा दो सौ पृष्ठीय इस पुस्तक में 34 साहित्य सृजकों का परिचय दिया है। इनमें डॉ. जगमल सहित ज्ञान भारिल्ल, हरमन चौहान ऐसे नाम हैं जिन्होंने साहित्य की विविध धाराओं में लेखन कर अखिल भारतीय ख्याति अर्जित की। सभी 19वीं सदी के हैं।

प्राक्कथन में जगमलसिंह ने लिखा-अधिकांश साहित्यकारों का जीवन व रचनाओं का परिचय लुप्त हो गया। यहां के कवियों में राजस्थानी भाषा के प्रति प्रेम स्वाभाविक है। कुछ की कविताएं

डॉ. देव कोठारी, डॉ. जगमल तथा डॉ. महेंद्र भानावत

राजस्थानी में हैं। कुछ कवि मुसलमान हैं। उनकी कविता में उर्दू, अरबी, पारसी का प्रभाव देखा जा सकता है। एस चांद व डॉ. जगमलसिंह केवल गद्य लेखक हैं किन्तु साहित्य में जानेमाने हस्ताक्षर हैं। पुस्तक का मूल्य 300 रूपये है।

दूसरी पुस्तक ब्यावर नगर और स्वतंत्रता संग्राम के लेखक प्रो. जगमलसिंह हैं। कुल 57 पृष्ठीय इस पुस्तक में चौदह स्वतंत्रता सेनानियों का परिचय दिया गया है। प्राक्कथन में डॉ. जगमलसिंह ने लिखा- ब्यावर नगर का जन्म ही स्वतंत्रता संग्राम के कारण हुआ। अजमेर मेरवाड़ा के रावत-महारात कभी किसी के अधीन नहीं रहे। अजमेर पर अधिकार किये बापू सिंधिया से सन् 1818 में अंग्रेजों ने प्राप्त किया। इस पर स्थानीय निवासियों ने संग्राम छेड़ दिया। नसीराबाद में छावनी स्थापित की।

1836 ई. में चार्ल्स डिक्सन ने क्रॉस के रूप में इसे बसा चारों ओर परकोटा बना चारों दिशाओं में क्रमशः चांग, अजमेरी, सूरजपोल तथा मेवाड़ी दरवाजे बनवाये। यह नगर मेवाड़-मारवाड़ का संधि स्थल होने से यहां मेवाड़ी-मारवाड़ी भाषा का प्रभाव मिलता है।

इस नगर में योगीराज अरविन्द घोष आये। उनके कहने पर रासबिहारी बोस ने आकर श्यामगढ़ के पुराने खंडरगढ़ तथा बावड़ी में लगभग दो हजार क्रान्किारियों को हथियार व बम बनाने की प्रायोगिक शिक्षा के साथ प्रशिक्षण दिया। यहां सात मंजिला नाहरमल की बावड़ी थी। चिरंजीलाल भगत की बगीची में सन् 1921 में चन्द्रशेखर आजाद और भगतसिंह छद्म वेश में रहे। गांधीजी के स्वतंत्रता संग्राम में यहां के अनेक नेता शरीक हुए।

इस दृष्टि से इस पुस्तक में ब्यावर के प्राचीन इतिहास को बड़े प्रमाण के साथ सुरक्षित रखा है और स्वतंत्रता के आन्दोलन में प्रमुखता के साथ भाग लेने वालों को स्मरण कर स्थायी मूल्य का महत्त्वपूर्ण काम किया है।

कलाम-ए-ग़नी में मास्टर अब्दुल ग़नी की लिखी गई शायरी का हाजी अब्दुल जब्बार खिलजी द्वारा हिन्दी रूपान्तरण मिलता है। कुल 220 पृष्ठीय यह सजिल्द प्रकाशन 300 रूपये मूल्य लिये है। इसके लिए डॉ. विजय कोठारी का यह मत द्रष्टव्य है- यह हिन्दी रूपान्तरण पाठकों को उर्दू शायरी के विभिन्न रसों में आनन्द विभोर कर देगा। ग़नी की शायरी में झरने सा संगीत, सरिता सा प्रवाह एवं लय तथा सागर सी गहराई की अनुभूति होती है। यह राष्ट्र एवं समाज को समर्पित सद् साहित्य है जो प्रेरणादायक एवं शिक्षाप्रद तो है ही, मानव मन की कोमलतम भावनाओं की अभिव्यक्ति भी है।

- डॉ. तुक्तक भानावत

दीवान को स्वर्ण वृक्ष की सजा

जैसलमेर रियासत के दीवान नथमल ने अपने पुत्र के पालने के लिए पेड़ काटने का आदेश दिया जो अवैध कार्य था। राजा को जब पता लगा तो नथमल को फटकारते हुए देवी को सोने का पेड़ चढ़ाने का आदेश दिया।

नथमल राजाज्ञा शिरोधार्य कर पेड़ काटने पहुंचा। बोरड़ी पर कुल्हाड़ी का वार करने पर पेड़ नन्हे बालक की तरह विलाप करने लगा। मोर की तरह कुरलाते उसने श्राप दिया- 'हे नथमल! तेरी घरवाली मर जाय। पालने में अठखेलियां करता बच्चा मर जाय। अपने स्थान पर बैठा तेरा ऊंट मर जाय। पांवों में सांकल डाली तेरी भैंस मर जाय।'

मुंह में घास डाल दीवान माफीनामा लेकर भादरिये में देवालय पहुंचा और जुर्म कबूल कर देवी को सोने का पेड़ चढ़ाया तब जाकर उसके घर में सारी स्थितियां सामान्य हुईं।

-आईदानसिंह भाटी

स्मृतियों के शिखर (85) : डॉ. महेन्द्र भानावत

अजूबी अनूठी समाधियां जानवरों की

यों तो हमारा देश ही कई प्रकार की विचित्रताओं से भरापूरा है जिसका सानी विश्व में अन्यत्र कहीं देखने नहीं मिलती, पर राजस्थान इन विचित्रताओं में अपनी विशिष्ट विलक्षणता लिए है। सतियों के स्मारक भी यहां पर्याप्त मात्रा में मिलते हैं। मानव हित के लिए किए गये विशिष्ट कार्यों के लिए यहां का मनुष्य किसी को आदर देने में कभी नहीं चूका। गांवों के देवरों में प्रतिष्ठित देवी-देवता और लोकजीवन में प्रचलित कथा-आख्यान, गीत-गाथा इसके साक्षी हैं। जिसने भी यहां परहित के लिए अपने प्राणों को उत्सर्ग कर दिया वह सदा-सदा के लिए अमर हो गया। यह बात मनुष्य के साथ ही नहीं, जानवर तक के साथ घटित हुई मिलती है।

किन्ही जानवरों में मानवीय किंवा देवीय गुणों को परख कर तदनुसार उनके प्रति सम्मान व्यक्त करने की भी यहां बड़ी प्राचीन परम्परा रही है। कई सांडों, बन्दरों, गायों, कुत्तों, सांपों के ऐसे कथा-किस्से मिलेंगे जिनके सुकृत्यों के फलस्वरूप यहां के लोगों ने उनकी मृत्यु के पश्चात उनके स्मारक बनाये हैं। समाधियां खड़ी की हैं। बड़े-बड़े भोज दिये हैं। शव-यात्राएं निकाली हैं। बस्तियों का नामकरण किया है। मन्दिर प्रतिष्ठित किये हैं। हवन कीर्तन किए हैं। जानवरों को भोजन पर न्यौता है और उनकी अस्थियां तक गंगाजी में प्रवाहित की हैं। इससे यह स्पष्ट है कि हमारे यहां सदैव-सदैव ही गुण-पूजा को प्रधानता दी जाती रही है। ये समाधियां पूरे देश तथा विदेश में भी देखने को मिलती हैं।

गाय को हमारे यहां माता कहा गया है। प्राचीन शास्त्रों में भी इसके कई उल्लेख मिलते हैं। बहिन-बेटी को शादी के पश्चात गाय दी जाती है। वछ बारस का तो त्यौहार ही गाय-पूजा का है। गायों के साथ-साथ बछड़ों का भी हमारे यहां बड़ा प्यार-आदर है। दीवाली पर हीड़ गाई जाती है जिसमें गौ-पुत्र को सर्वाधिक महत्व-गौरव दिया जाता है। दीवाली के दूसरे दिन गांव-गांव बैलों की विशेष पूजा की जाती है। चौपों में गायें भड़काई जाती हैं और उन्हें लपसी-चावल का भोजन कराया जाता है।

जयपुर जिले के सुमेरपुर के निकटवर्ती गांव बीमलपुर में गाय-बछड़े का बड़ा भव्य मन्दिर बनाया गया है जिस पर चालीस हजार रूपये खर्च किये गए हैं। इस मन्दिर के पीछे भी एक अजीब घटना-प्रसंग जुड़ा हुआ है। सन् 1998 की जलझुलनी एकादशी को इस गांव की महिलाओं ने पांच दिवसीय उपवास किया और एक गाय तथा बछड़े का पूजन किया। आखिरी दिन उपवास खोलने के एक घण्टे पहले वह गाय मृत्यु को प्राप्त हुई।

गांव वालों ने सोचा कि गाय बड़ी पुण्यवाली थी। पूर्वजन्म में उसके द्वारा किये अच्छे कार्यों के फलस्वरूप उसे महिलाओं का पूजापा मिला और उपवास के दौरान उसने शरीर छोड़ा अत: उसकी स्मृति को अमर रखा जाना चाहिए। इसी भावना ने वहां मन्दिर का निर्माण कराया और उसमें गाय-बछड़े की पत्थर की बनी प्रतिमा प्रतिष्ठित की गई। आसपास के लोग आज भी बड़े श्रद्धाभाव से मंदिर के दर्शन करते हैं और गाय-बछड़े के प्रति सम्मान के भाव ग्रहण करते हैं।

गाय-बछड़े के साथ-साथ सांड को भी बड़ी पूज्य भावना से देखा जाता है। मारवाड़ में तो इन सांडों को लोग प्रतिदिन नियमित रूप से मिठाई आदि खिलाते भी देखे गए हैं। कभी किसी दुकान में यदि किसी सांड ने कोई चीज खा ली तो भी दुकानदार उसके प्रति बुरी भावना नहीं लाएगा। शेखावाटी के फतहपुर में तो सांड का एक स्मारक बना हुआ है। उसकी स्थापना पर एक मृत्युभोज किया गया जिसमें सात तरह की मिठाइयां बनवाई गई और सारे नगर को जीमने के लिए बुलाया गया। उसी समय एक बड़े चबूतरे पर सांड की मूर्ति स्थापित की गई और शिलालेख लगवाया गया।

कई जगह सांड की मृत्यु हो जाने पर उसकी गाजे-बाजे के साथ शवयात्रा निकाली जाती है। ऐसी स्थिति में उसे कफन ओढ़ाकर भैंसागाड़ी में लादकर पूरे कस्बे में घुमाया जाता है। पुष्प गुलाब से उसे सम्मान-श्रद्धा-भाव दिये जाते हैं। धूप अगरबत्ती की जाती है।

बीकानेर के पुनास गांव के लोगों ने तो सांड की मृत्यु पर उसकी समाधि बनाई और चौतरफा वृक्ष लगाये। नाथद्वारा में तो एक बार एक सांड की शवयात्रा निकाल कर उसे दो बोरी नमक के साथ दफनाया गया। उदयपुर के श्मशान में सती की चबूतरी के पास साण्ड की चबूतरी बनी हुई है।

कुत्तों की मृत्यु पर तो तालाब तथा छतरी तक बनाए गये हैं। जोधपुर में एक बणजारे ने अपने प्रिय पात्र रातिया नामक कुत्ते की यादगार में एक नाडा तालाब व छतरी बनवाई। यही इलाका जब बस्ती में परिवर्तित हुआ तो उसका नामकरण ही रातिया तथा नाडा के सम्मिलित रूप में 'रातानाडा' हो गया। कहा जाता है कि यहां के बालसमन्द उद्यान में जोधपुर के राजपरिवार के कुत्तों के कई स्मारक हैं। ये स्मारक इस परिवार के स्वामिभक्त कुत्ते टेनी, पिदगी, ब्यूटी, शायर, किवी, फार्म, काजी, चांग, मायल, मिसचीफ मेकर आदि के हैं।

नसीराबाद के सायरओली बाजार में शेरसिंह नामक कुत्ते की मृत्यु पर बैंडबाजों तथा फूल-गुलाब की उछाल के साथ शवयात्रा निकाली गई। पूरे बारह दिन तक उसका शोक मनाया गया। बारहवें दिन नगर के तमाम कुत्तों को गुल्लों (गुलगुल्लों तथा रसगुल्लों) का भोजन कराया गया। इस दिन खूब भजन कीर्तन हुए। एक कूकरसिंह नामक कुत्ते को शेरसिंह का उत्तराधिकारी बनाया गया। फलस्वरूप उसके पगड़ी बंधाई की रस्म पूरी की गई। रात को अच्छी रोशनी की गई। इस अवसर पर कुत्ते की यादगार को बनाए रखने के लिए फोटो तक खींचवाए गये। उदयपुर के गुलाबबाग में कुतिया की स्मृति में किसी महारानी की बनाई हुई छतरी है।

बन्दर को हनुमान का रूप माना जाता है। इसकी मृत्यु पर तो सजी-सजाई डोल निकाली जाती है जिसमें बन्दर को बैठा हुआ रखा जाता है। कई जगह रात्रि जागरण तथा हवन आदि किए जाते हैं। समाधि देने पर चबूतरा बनाया जाता है और दाह संस्कार पर चन्दन नारियल दिये जाते हैं। रेवाड़ी के चौक बाजार में हनुमानजी की मूर्ति के चरणों में शरीर छोड़ने वाले बन्दर को जगनगेट के पास वाली ठठेरों की बगीची में समाधिस्थ किया गया। कुचेरा में तो एक बन्दर की विद्युत करन्ट से मृत्यु होने पर उसकी डोली निकाली गई। कहते हैं मरते वक्त उसके मुंह से राम शब्द सुनाई दिया। इस बन्दर को यहां से लीराई ले जाया गया और किसी तरह उसकी यादगार बनाये रखने के लिए एक समिति का निर्माण किया गया जिसने करन्ट बालाजी के नाम से एक मंदिर का निर्माण किया।

सांपों की मृत्यु पर भी इसी तरह के विचित्र क्रिया-कर्म किए जाते हैं। जैसलमेर में तो सांप को कफन देकर समाधिस्थ करते हैं। भवानीमण्डी के निवासी रामप्रताप तेली ने तो अपने कुए पर रहे सर्पराज की मृत्यु होने पर उसे चन्दन का दाग दिया और विधिवत क्रिया-कर्म करने के उपरान्त उसके अवशेष लेकर हरिद्वार की यात्रा की और गंगाजी में उसकी अस्थियां प्रवाहित की।

मुगल बादशाह अकबर को एक हथिनी बहुत प्रिय थी जिस पर बैठकर वे शिकार को जाया करते थे। उस हथिनी ने कई बार बादशाह की रक्षा की। जब वह मर गई तो बादशाह ने फतहपुर सीकरी में उसकी स्मृति में एक मीनार बनवाई जो 'हिरण मीनार' के नाम से प्रसिद्ध है।

बीकानेर के महाराजा अनूपसिंह के स्मारक के पास मोरों का स्मारक भी अपने में बड़ी दिलचस्प घटना लिये है। कहते हैं जब महाराजा अनूपसिंह की मृत्यु के बाद उनका दाह संस्कार किया जा रहा था तो पास ही के एक वृक्ष से एक-एक करके कई मोर कूद कर चिता में जल मरे। लोग उन्हें बचाने लगे तो कहते हैं चिता से आवाज गूंजी- 'इन्हें मत बचाओ, जलने दो। ये महाराजा के ही पिछले जन्म के राज परिवार के सदस्य हैं। जलने से ही इनकी सद्गति होगी।' तब उनका भी वहां पास ही स्मारक बनाया गया।

तमिलनाडु के रामनाथपुरम् जिले की एक पहाड़ी के शिखर पर एक हाथी के दांत का स्मारक बना हुआ है। कहते हैं पहाड़ी पर बने शिव मन्दिर में प्रतिदिन हाथी आया करता था जिसके एक ही दांत था। जब वह मर गया तो शिव-भक्तों ने उसका एक स्मारक बनाकर उस दांत की भी वहीं स्थापना कर दी।

अमेरिका के एक गांव में एकबार पकी फसल पर भयानक टिड्डी-दल उमड़ पड़ा। लोगबाग बहुत परेशान हुए। उसी समय देव-योग से चीलों का समूह आ पड़ा जिसने टिड्डी-दल का खात्मा कर दिया। इस पर गांव वालों ने चीलों का एहसास माना और एक स्मारक बना दिया।

उदयपुर के देलवाड़ा ठिकाने के राजराणा द्वारा देवी राठासेण माता को पहाड़ी पर हाथी रामप्रसाद की बलि दी जहां स्मारक शिला खड़ी है। पहाड़ी से हाथी के साथ महावत ने भी प्राण त्यागे।

रोम में एक बार रात्रि को टाइवर नदी में बाढ़ आ गई। इसकी सूचना मुर्गों ने बांग देकर लोगों को दी। लोग जाग गए और अपना कीमती सामान आदि ले सुरक्षित हो गए। रोमवासी मुर्गों की इस बात से बड़े प्रभावित हुए और उन्होंने उनकी स्मृति में नदी पर एक पुल बनवा दिया।

जानवरों के प्रति मनुष्य का यह प्रेम और ममत्व यह सिद्ध करता है कि गुणों की पूजा का प्रत्येक प्राणी अधिकारी है चाहे वह जानवर ही क्यों न हो। महाराणा प्रताप का प्यारा साथी चेटक भी प्रताप ही की तरह अमर हो गया। हल्दीघाटी के मैदान में बनी उसकी समाधि प्रताप के प्रति उसकी स्वामिभक्ति और शौर्य वीरत्व के कई इतिहास पृष्ठ खोल देती है। सच तो यह है कि पशुओं के बिना मनुष्य अपना जीवन सूना मानता है। मनुष्य की यदि कोई मजबूरी नहीं हो तो कोई मनुष्य ऐसा नहीं मिलेगा जो अपने साथ कोई न कोई जानवर नहीं रखना चाहेगा।

डॉ. दिलखुश सेठ का सम्मान

उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान एवं विवेक पार्क विकास समिति सेक्टर 3 व अन्तर्राष्ट्रीय हंसोड़ा सम्मेलन ने सयुक्त रूप से डॉ. दिलखुश सेठ वैद का 30,000 पाईल्स एवं अर्श सम्बंधी रोगों के सफल ऑपरेशन करने पर सम्मान किया गया।

नारायण सेवा संस्थान के संस्थापक चेयरमैन पद्मश्री कैलाश 'मानव' ने बताया कि वर्षों से डॉ. सेठ बाराबंकी जिले के जंगलों में भी पाईल्स और भगंदर आदि नासूर रोगों के नि:शुल्क ऑपरेशन करते आ रहे हैं। वे गरीबों और रोगियों की पीड़ा को समझते है। सम्मान समारोह में डॉ. गौरीशंकर आमेटा, संरक्षक देवराज शर्मा ने भी विचार प्रकट किये तथा विवेक पार्क के पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी सदस्य सम्पतराज चपलोत, सुरेश कावड़िया, विपिन पारीख भी उपस्थित रहे।

राजस्थानी मान्यता की मांग

राष्ट्रीय प्रगतिशील लेखक संघ की ओर से जयपुर में आयोजित 17वें राष्ट्रीय सम्मेलन के समापन समारोह के अवसर पर राजस्थानी को स्वतन्त्र, समृद्ध एवं वैज्ञानिक भाषा मानते हुए भारत सरकार से राजस्थानी भाषा को संवैधानिक मान्यता देकर संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करने की मांग दोहराई। प्रस्तावक मीठेश निर्मोही ने कहा कि राजस्थानी देश के सबसे बड़े भूभाग वाले प्रांत राजस्थान के दस करोड़ राजस्थानियों की मातृभाषा है।

शब्द रंजन

उदयपुर, मंगलवार 01 अक्टूबर 2019

सम्पादकीय

हिन्दी और हिन्द

हिन्दी दिवस आता है तब सारे अखबार हिन्दीमय लगते हैं। हर संस्था संगठन हिन्दी की अलख में कसीदे पढ़ते-पढ़ाते मिलते हैं। भारत देश ही ऐसा मिलेगा जहां प्रत्येक दिवस ही किसी-न-किसी को समर्पित है। वार, त्यौहार, व्रत, अनुष्ठान तो वर्ष के 365 दिवसों से कई गुना अधिक संख्या लिये हैं। विविध मान्यताओं, धर्मों, सम्प्रदायों, संगठनों तथा अखाड़ों वाला देश शायद ही विश्व में कोई अन्य हो इसीलिए कवियों, साहित्यसेवियों तथा चिन्तकों ने इसकी प्रशंसा में यहां तक लिख दिया- 'सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा।'

सच ही है महाकवि प्रसाद ने अभ्यर्थना की- 'जगे हम, लगे जगाने देश, विश्व में फैला फिर आलोक, अखिल संस्कृति हो उठी अशोक।' राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने लिखा- 'जय-जय भारत माता, तेरा बाहर भी घर जैसा रहा प्यार ही पाता।' पूरे विश्व ने इसे विश्व गुरु माना।

यही ऋषि-मुनियों की तपोभूमि रहा। आज भी पहाड़ों, गुफाओं, जंगलों में तपसी तपते-तपते सूक्ष्म जीवी बने हुए हैं। पाण्डव शुद्ध होने, पाप मुक्त होने हिमालय चले गए जो आज भी हिममानव बने मनुष्य की निगाह पड़ते ही दृष्टि ओझल हो जाते हैं। यहीं कुम्भ जैसे मेले लगते हैं। यहीं विक्रमादित्य का सिंहासन बत्तीसी रहा। दानवीर कर्ण, सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र हुए। गंगा आई। अनेक देवी-देवता रूप-भेष बदल मृत्युलोक की सैर करते, दृश्य-अदृश्य होते यहीं देखने को मिलते हैं।

यहीं हल्दीघाटी, प्रताप, शिवा, पद्मिनी, मीरां हुई। मुण्ड विहीन होते रूण्ड के देव बने। यहीं अनेकानेक तीर्थ, देवी-देवता, नुगरी-सुगरी शक्तियां, खण्डहरों का वैभव, पुरातात्विक वैचित्र्य और अद्भुत अभूतपूर्व सभ्यताओं के श्रीदर्शन होते हैं।

इतना सबकुछ और फिर हमारा अपना राजकाज, संविधान, शासनतन्त्र, झण्डा, पक्षी, गीत-गान भी हमने अपनी पहचान का बना रखा है पर भाषाजनित जबान आने पर कुछ लोग बगलें झांकने लग जाते हैं। मुंह मिचकोड़ लेते हैं।

'आओ देश बनाये' का आह्वान करने वाले देश को गूंगा बनाने पर लगता है शेर की खाल ओढ़े सियार बने हुए हैं और कितने ही अवरोध देने पर भी हिन्दी चुपचाप गुपचुप पांव पसार रही है। देश तो दूर, विदेशों में जो वितान तान रही है, वह विस्फारित कर देने वाला है। अंग्रेजी अखबारों में हिन्दी विज्ञापन ही नहीं, हिन्दीमय अंग्रेजी, इंगलिश की तरह हिन्दी हिंग्लिश बन हिन्दवाण बनी हुई है।

हिन्दी हमतम की भाषा नहीं है। वह फड़फड़ाने, हकलाने और बहलाने बहकाने की डोफरवाली भी नहीं है। वह 'जो हिन्दी को नजाने ताको हिन्द को न जानिये' का संकल्प सन्देश देती अविराम बनी 'एक राष्ट्र एक भाषा' की सरपटी सैर में लगी हुई है।

ओस की बूंद सी नन्ही परी

- प्रांजली मेघवाल -

ओस की बूंद सी नन्ही परी हूं मैं।
तु□हें कुछ बताना चाहती हूं मैं।।
अपने जीवन के लिए सबसे लड़ी हूं मैं।
जीना चाहती हूं, उड़ना चाहती हूं मैं।।
पर न जाने ही □यों,
मेरे अपने ही मुझे नहीं चाहते।
बेटी को बोझ समझते हैं
इसलिए कचरे के ढेर में पड़ी हूं मैं।।
साबित कर दूंगी एक दिन,
बेटी भी बेटों से कम नहीं।
कहते हैं, बेटी रूप है लक्ष्मी का,
पर हक तो नहीं देते जीने का।।
घर में बरकत लाना चाहती हूं मैं,
दुनिया में आना चाहती हूं मैं
आना चाहती हूं मैं।
ओस की बूंद सी नन्ही परी हूं मैं।।

डॉ. भानावत लिखित कठपुतली पुस्तक का लोकार्पण

उदयपुर। प्रसिद्ध लोकसंस्कृतिविज्ञ डॉ. महेन्द्र भानावत लिखित 102वीं कृति कठपुतली का लोकार्पण भारतीय सांस्कृतिक इतिहास के विशेषज्ञ विद्वान डॉ. सुरेश कारूणिक तथा संस्कृतिचेता डॉ. सत्यनारायण द्वारा किया गया।

डॉ. सुरेश, डॉ. महेंद्र तथा डॉ. सत्यनारायण

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र नई दिल्ली के उदयपुर स्थित केन्द्र में ग्यारह राज्यों के 65 शिक्षकों की उपस्थिति में आयोजित 267वीं कार्यशाला में कठपुतली कला परम्परा तथा उसकी शैक्षणिक उपयोगिता विषयक व्याख्यान के दौरान डॉ. भानावत ने बताया कि कठपुतली के प्रकाशक बालसाहित्य के जानेमाने हस्ताक्षर राजकुमार जैन 'राजन' हैं। इससे पूर्व श्री राजन ने डॉ. भानावत लिखित गवरी पुस्तक प्रकाशित की थी। श्री राजन पूरे देश में भ्रमणकर अपने द्वारा बालोपयोगी ऐसे अब तक पैंतालिस हजार से अधिक प्रकाशन शिक्षालयों में निशुल्क भेंट कर चुके हैं।

सुरेश कारूणिक ने कहा कि सांस्कृतिक स्रोत नई दिल्ली द्वारा पिछले 23 वर्ष से पूरे देश में ऐसी एक हजार से अधिक कार्यशालाएं आयोजित कर 28 राज्यों में शिक्षा के साथ सांस्कृतिक समन्वय की दिशा में आठ हजार से अधिक शिक्षक प्रशिक्षित किये जा चुके हैं।

कानोड़ मित्र मंडल द्वारा वरिष्ठों को अमृत तथा 70 छात्रों को प्रतिभा सम्मान

उदयपुर। कानोड़ मित्र मंडल द्वारा रविवार को उमरड़ा स्थित कालिका रिसोर्ट एवं होटल में स्नेह सम्मेलन समारोह में नौ वरिष्ठों को अमृत, छह-छह संरक्षकों एवं भामाशाहों का बहुमान तथा विविध वर्गों में विशिष्ट प्रतिभा प्राप्त करने वाले 70 छात्रों का सम्मान किया गया। सम्मेलन में चार सौ सदस्यों एवं परिजनों ने भाग लिया।

अध्यक्ष हिमांशुराय नागोरी ने बताया कि पिछले 35 वर्षों से मित्र मंडल ने देश-विदेश में रह रहे कानोड़वासियों से संपर्क कर नये सदस्य बनाये और यह अभियान अभी भी चालू है। समारोह के अध्यक्ष पद से बोलते डॉ. महेन्द्र भानावत ने कहा कि वह ऐसा समय था जब मित्र मंडल की स्थापना हुई और धीरे-धीरे उसकी देखादेख अन्य कई मित्र मंडल अस्तित्व में आए। उन्होंने कहा कि संस्थाओं का पोषणा वे ही कर सकते हैं जो कुर्सी के व्यामोह में नहीं उलझ कर ऐसी छवि देते हैं जिनके पीछे-पीछे कुर्सी चलती है।

महामंत्री दिलीप भानावत ने बताया कि ऐसे कार्यक्रम सदस्यों के हर वर्ग की उपलब्धियों को रेखांकित कर कइयों के लिए प्रेरक तथा मार्गदर्शक सिद्ध होते हैं। समारोह में डॉ. कनक व्यास, डॉ. कनक ऊदावत, अली असगर बोहरा, ऋषभ भाणावत, डॉ. संजीव बाबेल, धर्मचंद नागोरी, सुंदर भानावत सहित कार्यकारिणी के संजय अलावत, जीवनसिंह पोखरना, कोमल वया, तखतसिंह भाणावत, अनिल पुरोहित, लोकेश बाबेल, लोकेश मल्लारा, युसुफ खान, महावीर भाणावत, विनोद मुर्डिया उपस्थित थे। - **दिलीप भानावत**

पीआईएमएस में महिला का सफल ऑपरेशन

उदयपुर। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (पीआईएमएस), हॉस्पिटल, उमरड़ा में चिकित्सकों ने पेट दर्द की असहनीय पीड़ा से पीड़ित महिला का ऑपरेशन कर जान बचाई है।

पीआईएमएस के चेयरमेन आशीष अग्रवाल ने बताया कि बांसवाड़ा के हमीरगढ़ निवासी 35 वर्षीय महिला को पेट में असहनीय दर्द की गम्भीर स्थिति में पीआईएमएस में लाया गया। उसके हीमोग्लोबिन की मात्रा 4 द्दद्व/स्रद्य (ग्राम प्रति डेसी लीटर) एवं पेट में 2.3 लीटर खून भरा हुआ था। जांच में पता चला कि महिला का बच्चा यूटरस के बाहर और यूटरस फटा हुआ था। इस पर डॉ. पी. के. भटनागर और टीम ने महिला का ऑपेरशन कर बच्चे को बाहर निकाला और यूटरस को रिपेयर करके महिला की जान बचाई।

भारतीय भाषाओं पर राष्ट्रीय परिसंवाद

नई दिल्ली के केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय द्वारा 22-23 जुलाई को आयोजित परिसंवाद में भारतीय भाषाओं पर विचार व्यक्त करते हुए पद्मश्री डॉ. श्यामसिंह ने कहा कि कुछेक भाषाओं को छोड़कर देश में अधिकांश भारोपीय भाषा-बोलियों का प्रचलन है। उन्होंने हिन्दी निदेशालय द्वारा प्रकाशित 'भारतीय भाषा कोश' की राष्ट्रीय उपयोगिता के महत्व पर प्रकाश डाला।

केन्द्रीय मंत्री व प्रतिष्ठित साहित्यकार डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' ने कोश का लोकार्पण किया। उन्होंने इस ऐतिहासिक कार्य से जुड़े सभी विद्वानों का हार्दिक अभिनन्दन किया। डॉ. अविनाशकुमार, राहुलदेव, डॉ. कन्हैयालाल भट्ट, डॉ. श्यामसिंह 'शशि', डॉ. राकेशकुमार शर्मा, डॉ. दिनेशचन्द दीक्षित, डॉ. किरण झा, डॉ. जगदीप यादव, डॉ. चन्द्रकला, प्रभाशंकर प्रेमी आदि ने विचार प्रकट किये।

'कुछ मीठे कुछ तीखे स्वर' का लोकार्पण

केन्द्रीय सेवा अधिकारी संस्थान, नई दिल्ली में डॉ. राधेश्याम मिश्र के कविता संग्रह 'कुछ मीठे कुछ तीखे स्वर' का लोकार्पण किया गया। समारोह के अध्यक्ष डॉ. श्यामसिंह 'शशि' ने कहा कि ये 'आर्ट ऑफ लिविंग' की कविताएं हैं जिन्हें एक मेडिकल डाक्टर की जीवनदायिनी लेखनी ने लिखा है।

विशिष्ट अतिथिगण डॉ. सुरेश ऋतुपर्ण, ब्रजेन्द्र त्रिपाठी, लक्ष्मीशंकर वाजपेयी, श्रीमती रमा पाण्डेय, डॉ. विनोद खेतान आदि ने पुस्तक के बारे में अपने विचार प्रकट किये। रचनाकार डॉ. मिश्र ने अपनी कविताओं का पाठ किया। बाद में कवि गोष्ठी का भी आयोजन किया गया। संचालन श्रीमती ममता किरण ने किया। - **डॉ. जे. के. शर्मा**

गुरु-प्रसाद-प्रेरणा से मैं 'प्रेरणा' बनीं

- कोमल वाधवानी 'प्रेरणा'-

आज दृष्टिबाधित हो जाने के बावजूद अपने गुरुजन की बदौलत ही उज्ज्वल, ऊर्जावान, कठोर कर्मशील एवं अंधकार से अखण्ड आनंदमय प्रकाश की ओर अग्रसर होती दृष्टि को सृष्टि मिलन की प्रार्थना लिए प्रभु-शरण हूं।

संस्कारों की नींव भरने का दायित्व होता है माता-पिता का, किन्तु उनकी बुनियाद पर जो पुख्ता इमारत खड़ी होती है, उसका निर्माणकर्त्ता होता है गुरु।

सन् 1965 में जब मैं नवीं कक्षा में थी, विद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'प्रेरणा' के लिए मेरी गुरु श्रीमती शकुन्तला पाराशर ने कहा- 'तुम पत्रिका के लिए अपनी रचना दो।' मैंने कहा- 'मैं नहीं लिख पाऊँगी।' वह बोलीं- 'कैसे नहीं लिख पाओगी? मुझे विश्वास है, तुम लिखोगी और अच्छा लिखोगी।'

मैं बेचैन रहने लगी यह सोचकर कि अगर उनके विश्वास को कायम न रख सकी तो क्या कभी उनसे नज़रें मिला पाऊँगी! उनके विश्वास से मेरे लेखन का जन्म हुआ। उसके पश्चात लगातार तीन वर्ष तक उसमें मेरा लेखन जारी रहा। गुरु की प्रेरणा से मैं अपने भावों को कागज पर उकेरने लगी और 'प्रेरणा' में ही प्रकाशित होने लगे। इस प्रेरणा शब्द ने मुझे इतना प्रभावित किया कि मैंने आगे जाकर इसे अपना उपनाम ही बना लिया।

मेरी गुरु मुझे अंतर-विद्यालयी और जिला स्तरीय वाद-विवाद प्रतियोगिताओं के लिए भी प्रोत्साहित करने लगीं। इससे मेरी वक्तृत्वशक्ति का विकास हुआ। मंच पर माइक पर बोलने में न तो कभी जीभ लड़खड़ाई, न हाथ-पैर ही काँपे। काव्य-गोष्ठियों में मंच पर रचना-पाठ करते समय जो आत्मविश्वास अर्जित किया आज काम आ रहा है।

फिर तो स्थानीय एवं राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में मेरी रचनाएँ छपने लगीं, तो गुरु की नज़रों से भी अवश्य वे किसी-न-किसी सूत्र से गुरुणी को खोज निकाला। सैंतालीस वर्ष बाद पाँच अध्यापिकाओं से फोन पर बातचीत करने का साहस जुटाया तो जो खुशी मिली वह कल्पनातीत थी।

वे सब अब 80 वर्ष से ऊपर की अति आदर्श लिए हैं। उनके आशीर्वाद और शुभकामनाओंजनित सुनहरे शब्द-पत्र अपने चौथे लघुकथा संग्रह में सम्मिलित कर भी ऋण मुक्त नहीं हो पा रही हूं। सच ही है, गुरु ने दृष्टि को सृष्टि दी। चाल करे प्रगति दी। लेखनी को शक्ति और हौंसलों को पंख दिये।

आज दृष्टिबाधित हो जाने के बावजूद अपने गुरुजन की बदौलत ही उज्ज्वल, ऊर्जावान, कठोर कर्मशील एवं अंधकार से अखण्ड आनंदमय प्रकाश की ओर अग्रसर होती दृष्टि को सृष्टि मिलन की प्रार्थना लिए प्रभु-शरण हूं।

इच्छा का बीजारोपण जरूरी

-सीताराम गुप्ता-

ब्राजील निवासी पुर्तगाली भाषा के मशहूर लेखक पाओलो कोएलो अपने चर्चित उपन्यास द अल्केमिस्ट में कहते हैं कि जब आप दिल से कुछ चाहते हैं तो सारी क़ायनात उसे आपसे मिलाने के लिए साज़िश रचती है।

चाणक्य ने भी कहा है, 'यथा बीजं तथा निष्पतिः' अर्थात् जैसा कारण वैसा ही कार्य। कारण कार्य सिद्धांत। इसको दूसरी तरह भी समझा जा सकता है।

आप काट नहीं सकते यदि आप बोते नहीं हैं। जिस प्रकार फसल पाने के लिए बीज बोना अनिवार्य शर्त है उसी तरह अन्य कुछ भी पाने के लिए उस चीज़ की चाहत अर्थात् मन में इच्छा का बीजारोपण भी अनिवार्य है। जब हम कोई बीज बो देते हैं तो उससे पेड़ उगना स्वाभाविक है। बोने के बाद उसे उगने से रोकना असंभव है। बिल्कुल इसी तरह से विचार रूपी बीज को वास्तविकता में परिवर्तित होने से रोकना भी असंभव है। यदि किसी भी तरह से अच्छे विचार रूपी बीजों का मन में रोपण कर दें तो उसके परिणाम को कोई नहीं रोक पाएगा।

हम स्वयं के अच्छे होने का संकल्प कर लें तो हमारे अच्छे होने में कोई बाधा उत्पन्न नहीं होगी। इच्छाएँ ही हमारा जीवन है, इच्छाओं से ही हमारे व्यक्तित्व का विकास है और इच्छाओं से ही समाज का निर्माण है। जीवन को संवारना है तो इच्छाओं को संवारना होगा। मन में उठने वाले हर भाव को देखना होगा। भावों को नियंत्रित करना होगा। ग़लत-सही का चुनाव करना होगा। अस्वस्थ भावों का त्याग करना होगा तथा स्वस्थ भावधारा का चुनाव या निर्माण कर उसे पोषित करना होगा। उसे दूसरे दूषित भाव-बीजों से बचाना होगा। विरोधी भाव बीजों के भूकंप से रक्षित करना होगा। सब जानते हैं कि क्या अच्छा है और क्या अच्छा नहीं है। कहा गया है कि शक्करखोरे को शक्कर और टक्करखोरे को टक्कर मिलती है। हम जो खाना चाहते हैं वही बाज़ार से ख़रीद कर लाते हैं। जो ख़रीद कर लाते हैं उसकी स्पष्ट छवि पहले से ही मन में निर्मित कर लेते हैं। यदि ऐसा नहीं करते तो ग़लत चीज़ की ख़रीददारी की संभावना बढ़ जाती है।

हम शक्करखोरे बनने की कामना करें न कि टक्करखोरे बनने की। यही चयन हमारी नियति निर्धारित कर हमें योग्य-अयोग्य अथवा सफल-असफल बनाता है। जिन्हें हम संकल्प कहते हैं वे यहीं से प्रारंभ होते हैं। किसी कार्य को करने की दृढ़ इच्छा अथवा शिद्दत से चाहत ही संकल्प है।

असल सिंह के तीन बाल

-नन्दकिशोर शर्मा-

एकबार एक गाँव के रयाण (महफिल) में लोग अमल-तम्बाकू की परस्पर मनवार कर रहे थे। उस समय कई लोग अपनी-अपनी दाढ़ियों एवं मूंछों की प्रशंसा कर रहे थे। रयाण में बैठे हुए एक व्यक्ति ने मूंछ पर हाथ फेरते हुए कहा-'पहले आई मूछां तो दाढ़ी रो कोई पूछो।' यदि पहले मूंछ आ जाती है तो दाढ़ी का कोई मूल्य नहीं रहता है। दूसरे ने पहले व्यक्ति की जिसके दाढ़ी आई हुई थी, लेकिन मूंछें नहीं थी, उसकी ओर इशारा करते हुये कहा, पहले आई दाढ़ी तो मूंछां बात बिगाड़ी। पहले दाढ़ी आने पर मूंछों के बिना मनुष्य का चेहरा बिगड़ा रहता है।

इस समय एक और व्यक्ति रयाण में बैठा हुआ था। उसके बड़ी और लम्बी-लम्बी दाढ़ी थी जो हवा में फहर रही थी। उसने अपनी दाढ़ी पर झटका लगाकर कहा-

'दाढ़ी दे दातार, फरहर लागे फूटरी।
मतदे चूंखा चार कूल लजावे कूतड़ी।

हे परमात्मा! दाढ़ी ऐसी सुन्दर दे जो हवा में फहरती रहे। इस समय दूसरा व्यक्ति जिसके दाढ़ी के मात्र दस बाल ही थे, उसको यह बात बुरी लगी। उसने दूसरे की ओर इशारा करते हुए कहा -

लोम्बी दाढ़ी झेड़वों लोम्बा कान खरों।
दाढ़ी रा दस बाल ऐ निशानी नरों।

लम्बी दाढ़ी मुर्खों के होती है। लम्बे कान गधों के होते हैं। उस समय उसके पास एक और व्यक्ति बैठा था उसके मात्र तीन बाल थे। उस व्यक्ति को यह बात बहुत बुरी लगी। उसने उत्तर दिया-

घास फूस मगरे धणों, सूण सैण सगा।
असल केसरी सिंघ रे साढ़ी तीन तगा।।

मेरे प्रिय सगे इस तरह के बाल तो मगरों में घास की तरह उगते हैं। मगर वीर वो पुरूष होता है जिसके केसरीसिंघ की तरह मात्र तीन बाल होते हैं।

ब्राड कास्टिंग जगत के सुनाम राजस्थान निवासी महेन्द्र मोदी 23 सितम्बर को शब्द रंजन कार्यालय में डॉ. महेन्द्र भानावत और डॉ. तुक्तक भानावत के साथ आकाशवाणी उदयपुर के दिनों की यादों में तब डॉ. तुक्तक भी युववाणी में कॉम्पियर थे।

बालमुकुन्द जोशी ने मंगलवार 24 सितम्बर को चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, सूचना एवं जनसम्पर्क मंत्री डॉ. रघु शर्मा से जयपुर में उनके सरकारी आवास पर मुलाकात की। मंत्रीजी ने स्नेह और अपनेपन से उनका स्वागत किया। जोशी ने कहा कि मैं उससे अभिभूत हूं। पुराने दिनों की यादों को ताजा कर उनके साथ बिताये लम्हें सदैव याद रहेंगे।

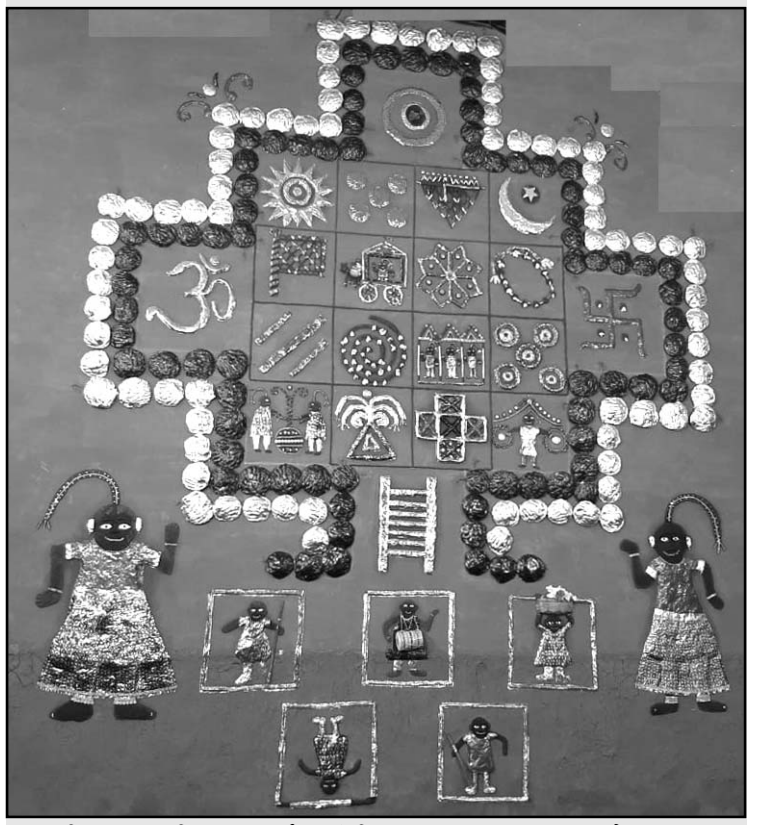

डॉ. दीपिका माली द्वारा निर्मित सांझी का यह मण्डन उदयपुर के शिल्पग्राम में सैंकड़ों पर्यटकों एवं दर्शकों का साक्षी बना। प्रो. सुरेश शर्मा, डॉ. विष्णु माली, डॉ. महेन्द्र भानावत, डॉ. कहानी भानावत ने 12वीं शताब्दी से चली आ रही इतिहास छूती इस गोबर फूली स्मृति-दर्शना को विश्व पटल का अनूठा अचरज बताया। डॉ. कहानी ने सांझी पर ही पीएच. डी. की।

रेखा लोढ़ा 'स्मित' पुरस्कृत

सन्दर्भ समीक्षा समिति की संस्थापक अध्यक्ष रेखा लोढ़ा 'स्मित' को उनके नवप्रकाशित 'रोशनी है दाँव पर' संग्रह के लिए सजल सर्जना समिति, मथुरा द्वारा रामदेवी गहलोत स्मृति सजल सुरभि पुरस्कार-2019 से पुरस्कृत किया गया। सम्मानस्वरूप शॉल, कंठहार, स्मृति चिन्ह तथा पाँच हजार एक सौ एक रुपये नकद प्रदान किये गए। अध्यक्षता डॉ. राजनारायण शुक्ल ने की। मुख्य अतिथि डॉ. शिवओम अम्बर, विशिष्ट अतिथि प्रो. सोम ठाकुर, डॉ. प्रीति जौहरी, एस.एस. यादव, डॉ. अनिलकुमारसिंह गहलोत तथा सूर्यकांत शर्मा थे। इस अवसर पर रेखा लोढ़ा व वीरेन्द्रकुमार लोढ़ा को सजल सेवा रत्न से सम्मानित किया गया।

को-ब्रांडेड फ्यूल क्रेडिट कार्ड लॉन्च

उदयपुर। एचडीएफसी बैंक लि. एवं इंडियन ऑईल ने नॉन-मेट्रो शहरों व कस्बों के ग्राहकों के लिए को-ब्रांडेड फ्यूल क्रेडिट

कार्ड लॉन्च किया। इंडियन ऑईल एचडीएफसी बैंक क्रेडिट कार्ड फ्यूल के उपयोग पर ग्राहकों को सर्वाधिक रिवार्ड एवं फायदे प्रदान करेगा। यह कार्ड रूपे एवं वीज़ा प्लेटफॉर्म्स पर उपलब्ध होगा।

ग्राहकों को आईओसीएल के 27,000 से अधिक आउटलेट्स पर 'फ्यूल प्वाईंट्स' के रूप में रिवार्ड प्वाईंट मिलेंगे। वो अन्य खर्चों, जैसे ग्रोसरी, बिल पेमेंट, यूटिलिटी एवं अन्य शॉपिंग पर भी फ्यूल प्वाईंट अर्जित कर सकते हैं। इन प्वाईंट्स को प्रतिवर्ष 50 लीटर तक के फ्यूल के लिए रिडीम किया जा सकता है।

यह कार्ड आईओसीएल के अधिकारियों विज्ञान कुमार, एक्ज़िक्यूटिव डायरेक्टर (आरएस), सुजॉय चौधरी, एक्ज़िक्यूटिव डायरेक्टर, पंजाब, एचपी एवं जम्मू-कश्मीर एवं एचडीएफसी बैंक के एक्ज़िक्यूटिव्स पराग राव, कंट्री हेड, पेमेंट्स बिज़नेस एवं मार्केटिंग और विनीत अरोड़ा, ब्रांच बैंकिंग हेड ने लॉन्च किया। इसके साथ ही यह कार्ड भोपाल, लखनऊ, इंदौर, रांची, कोच्चि, विशाखापट्नम, गुवाहाटी, नागपुर, शिलाँग, वाराणसी और पंजिम आदि शहरों में 135 इंडियन ऑईल आउटलेट्स पर भी लॉन्च किया गया।

एचडीएफसी बैंक द्वारा 'फेस्टिव ट्रीट्स' लॉन्च

उदयपुर। एचडीएफसी बैंक ने भारत का सबसे बड़ा फाईनेंशल सर्विसेस धमाका, 'फेस्टिव ट्रीट्स' लॉन्च किया। ग्राहकों को लोन से

लेकर बैंक अकाउंट तक सभी बैंकिंग उत्पादों पर विशेष ऑफर तथा 1000 से ज्यादा ब्रांडों पर बड़ी छूट का लाभ मिलेगा।

स्पेशल फेस्टिव ऑफर पहली बार रिटेल उपभोक्ताओं एवं बिज़नेस ग्राहकों के लिए वित्तीय समाधानों के पूरे स्पेक्ट्रम में उपलब्ध होगा। ग्राहकों को लोन पर प्रोसेसिंग शुल्क में छूट, रिड्यूस्ड ईएमआई, गिफ्ट वाउचर आदि अनेक फायदे मिलेंगे।

नेशनल कैम्पेन का लॉन्च मुंबई में आयोजित एक ईवेंट में अरविंद वोहरा, कंट्री हेड- ब्रांच बैंकिंग, एचडीएफसी बैंक ने किया। इस अवसर पर एचडीएफसी बैंक के मैनेजिंग डायरेक्टर आदित्य पुरी भी मौजूद थे।

कैम्पेन के स्केल को देखते हुए यह देश में 10 अन्य स्थानों पर एक साथ लॉन्च किया गया, जिनमें अहमदाबाद, चंडीगढ़, हैदराबाद, जयपुर और लखनऊ शामिल हैं। जयपुर में ईवेंट का लॉन्च प्रियांक विजयवर्गीय, वरिष्ठ उपाध्यक्ष, सर्किल हैड, राजस्थान, एचडीएफसी बैंक ने किया।

टेक्नो की नई स्पार्क्स श्रृंखला लाँच

उदयपुर। टेक्नो, प्रीमियम ऑफलाइन स्मार्टफोन ब्रांड अपने सभी नए स्पार्क-सीरीज़ लॉन्च के जरिए अपने ग्राहकों को नई सौगात दे रहा है, जिसमें टेक्नो स्पार्क गो, टेक्नो स्पार्क एयर 4 और टेक्नो 4 शामिल हैं। ट्रांज़ियान इंडिया के सीईओ अरिजीत तालापात्रा ने बताया कि टेक्नो स्पार्क पोर्टफोलियो में 4 स्मार्टफोन शामिल हैं: टेक्नो स्पार्क रु 5,499 पर, टेक्नो स्पार्क गो 4 रु 6,999 पर उपलब्ध होंगे। टेक्नो स्पार्क 4 दो वेरिएंट में उपलब्ध होंगे: रु 7999 में 3जीबी +32जीबी और रु 8999 में 4जीबी+ 64जीबी।

अरिजीत तालापात्रा ने बताया कि इस महीने की शुरुआत में, ब्रांड ने अपने दो नए टेक्नो स्पार्क डिवाइस लॉन्च किए, जिसमें टेक्नो स्पार्क गो और टेक्नो स्पार्क 4 एयर शामिल हैं। लांच के 15 दिनों के भीतर ही टेक्नो स्पार्क गो सबसे ज्यादा बिकने वाला डॉट नॉट डिस्प्ले स्मार्टफोन सबसे कम मूल्य रु 5499 वाला स्मार्टफोन बन गया है। नवरात्री के इस पावन पर्व पर स्पार्क गो की खरीददारी करने पर यह अपने ग्राहकों को रु 799 की कीमत वाला ब्लूटूथ इयरपीस उपहार स्वरुप दे रहा है।

बिग बिलियन डेज़ स्पेशल की घोषणा

उदयपुर। फ्लिपकार्ट ने बिग बिलियन डेज़ स्पेशल के तहत फैशन, इलेक्ट्रॉनिक, मोबाइल, फर्नीचर के अलावा और तरह के प्रोडक्ट पर 40 लोकप्रिय ब्रांड के साथ भागीदारी की है, जिनमें से हर ग्राहक के लिए कुछ न कुछ खास मिलने की गारंटी है। फ्लिपकार्ट की वाइस प्रेजिडेंट इवेंट्स, एंगेजमेंट और मर्चेंडाइजिंग ने कहा कि त्यौहारों के मौसम में ग्राहक कुछ खास, शानदार खरीद करने का मौका चाहते हैं और इसलिए फ्लिपकार्ट द्वारा 'बिग बिलियन डेज़ स्पेशल' की पेशकश की गई है - एक ही जगह उपलब्ध कई तरह के सर्वोत्तम ब्रांड के साथ तैयार किए गए लिमिटेड एडिशन प्रोडक्ट का खास तौर पर चुनकर बनाया गया कलेक्शन है। बिल बिलियन डेज़ भारत में सबसे अधिक पसंद की जाने वाली शॉपिंग इवेंट्स में से एक है और हर साल हम अपने ग्राहकों के लिए इसे अधिक मनोरंजक बनाने के तरीके खोजते हैं।

डीएचएल एक्सप्रेस द्वारा दरों में बढ़ोतरी की घोषणा

उदयपुर। अग्रणी अंतर्राष्ट्रीय एक्सप्रेस सेवा प्रदाता डीएचएल एक्सप्रेस ने आज कीमतों में बढ़ोतरी की घोषणा की है, जो 1 जनवरी, 2020 से लागू होगा। शिपमेन्ट का औसत मूल्य 6.9 प्रतिशत बढ़ जाएगा। हालांकि सीमा पार ई-कॉमर्स के शिपमेन्ट्स के लिये यह बढ़ोतरी 15 प्रतिशत तक हो सकती है, जिससे आपूर्ति की लागत बढ़ेगी।

डीएचएल एक्सप्रेस इंडिया के कंट्री मैनेजर आर. एस. सुब्रमण्यिन ने कहा कि डीएचएल एक्सप्रेस में हम लगातार बेजोड़ गुणवत्ता की आपूर्ति और अपने ग्राहकों को बेहतर सेवा प्रदान करने का प्रयास करते हैं। इसलिये हमें अवसंरचना पर निवेश करना पड़ता है। वार्षिक मूल्य व्यवस्था से हम कम कार्बन उत्सर्जन वाले एयरक्राफ्ट्स, उन्नत केन्द्रों और सुविधाओं तथा खोजपरक प्रौद्योगिकी में निवेश कर सकते हैं। इसमें शीर्ष स्तर की सॉर्टिंग टेक्नोलॉजी भी शामिल है, जिससे हम बड़े परिमाण को संभाल सकते हैं और बाजार में अग्रणी ट्रांजिट टाइम बनाये रख सकते हैं। डीएचएल विश्व के बढ़ते विनियमों और सुरक्षा मानकों का पूर्णतया अनुपालन करने के लिये भी निवेश कर रहा है। यह सभी निवेश हमारे ग्राहकों को संपूर्ण संतोष देते हैं, जब वे अंतर्राष्ट्रीय शिपिंग करते हैं।

मायबाइक बायसाईकिल की सेवाएं शुरू

उदयपुर। मायबाइक ने उदयपुर स्मार्ट सिटी लिमिटेड के साथ मिलकर अपनी स्मार्ट बाइक सेवाओं का विस्तार किया है। पिछले एक

साल से अब तक यह सेवा देवाली के मायबाइक स्टेशन से संचालित थी जहां से साइकिल को किराये पर लेकर उसका उपयोग किया जा रहा था।

मायबाइक के संस्थापक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी अरिजीत सोनी ने कहा कि हमने फतहसागर, रानी रोड़ और संजय गांधी पार्क पर अपनी सेवाएं शुरू कर दी है। आने वाले माह में हम पुराने शहरी क्षेत्रों चांदपोल, गुलाबबाग, दूध तलाई, शीतला माता चौक में और अधिक स्टेशन जोड़ेंगे। शुरूआत में हमारा लक्ष्य उदयपुर में आने वाले पर्यटक हैं जो एक स्टेशन से साइकिल लेकर दूसरे स्थान पर जा सकेंगे। इस नवीन पहल से उदयपुर के स्थायी पर्यटन विकास को नयी दिशा मिलेगी श्री सोनी ने कहा कि विगत पांच वर्षों में अहमदाबाद मुख्यालय वाली इस कंपनी ने मुंबई, जामनगर, दाहेज एवं मेहसाणा जैसे शहरों में विस्तार किया है और अब उदयपुर में भी वृहद स्तर पर विकास किया जा रहा है। वर्तमान में 4,000 साइकिलों को संचालित किया जा रहा है। उपयोगकर्ता केवल स्मार्ट बाइक ऐप के माध्यम से साइकिल किराए पर लेकर मात्र 19 रूपये प्रति घंटे के बाद एक रूपये प्रति घंटे में इसका लाभ उठा सकते है।

स्वांस नली में फंसा मूंगफली का दाना निकाला

उदयपुर। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल सांइसेज (पीआईएमएस), उमरड़ा में चिकित्सकों ने एक मरीज की स्वांस नली में फंसा मूंगफली का दाना दूरबीन विधि से निकाला है।

पीआईएमएस के चेयरमेन आशीष अग्रवाल ने बताया कि 63 वर्षीय एक मरीज को सांस लेने में तकलीफ के चलते पीआईएमएस में भर्ती कराया गया। जांच में मरीज की स्वांस नली में मूंगफली का दाना फंसा होने का पता चला। इस पर डॉ. अशोक कुवाल एवं एंडोस्कोपी टीम द्वारा दूरबीन विधि से मरीज की स्वांस नली में फंसा एक से.मी. का मूंगफली का दाना निकाला गया। ऑपरेशन के दौरान एनेस्थेटिस्ट डॉ. राकेश कुशवाह एवं डॉ. नीरज त्यागी ने सहयोग दिया।

मॉन्स्टर एनर्जी द्वारा नया प्रॉडक्ट 'अल्ट्रा' लॉन्च

उदयपुर। अमेरिका की नंबर वन एनर्जी ड्रिंक, मॉन्स्टर एनर्जी, ने भारत में अपना शुगर फ्री, नो कैलोरी प्रॉडक्ट 'अल्ट्र' लॉन्च किया। मॉन्स्टर एनर्जी ने इस प्रॉडक्ट को एक्स गेम्स के 6 बार गोल्ड मेडलिस्ट रह चुके स्टंटमैन, जैक्सन

स्ट्रॉन्ग के साथ मिलकर लॉन्च किया है। जेम्स बॉन्ड की क्लासिक मूवी 'ऑक्टोप्सी' में दिखाये गये टुकटुक का पीछा करने वाले चर्चित दृश्य को, जिसे 1983 में उदयपुर में फिल्माया गया था, इसे जैक्सन के साथ उदयपुर में रीक्रिएट किया।

जैक्सन ने कहा कि मैं यहां आकर और मॉन्स्टर एनर्जी के इस प्रोजेक्ट का हिस्सा बनकर बहुत खुश हूं। मैं जेम्स बॉन्ड का, खासकर उनके स्टंट्स का, बहुत बड़ा प्रशंसक हूं। 36 साल बाद, ऑक्टोपसी के अमर हो चुके दृश्य को रीक्रिएट करने का मौका मिलना मेरे लिए सम्मान की बात है।

मॉन्स्टर एनर्जी इंडिया के कंट्री मैनेजर, मफाडेल जंजीरा ने बताया कि हमें भारत में अपने नए शुगर फ्री, नो कैलोरी प्रॉडक्ट 'अल्ट्रा' के लॉन्च की घोषणा करते हुए गर्व महसूस हो रहा है। हमारा मानना है

कि बढ़िया स्वाद और साइट्रस फ्लेवर वाला यह ड्रिंक सामाजिक रूप से सक्रिय रहने वाले भारत के युवाओं को पसंद आयेगा और उनके उत्साह को बढ़ायेगा। अल्ट्रा सितंबर महीने से पूरे भारत में उपलब्ध है।

जैक्सन ने अपनी मेन्युफ्रेक्चर की गई बाइक पर स्टंट किये। उनके स्टंट को देखकर स्वरूपसागर-फतहसागर रोड़ पर आने-जाने वाले लोग जहां थे वहीं रूक गए और दांतों तले ऊंगलियां दबा ली। इस दौरान माहौल ऐसा हो गया जैसे कोई हॉलीवुड की मूवी का स्टंट शो चल रहा हो।

गजनेर पैलेस 'बेस्ट हेरिटेज होटल' से सम्मानित

उदयपुर। विश्व पर्यटन दिवस पर विज्ञान भवन नई दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय पर्यटन पुरस्कार में एचआरएच ग्रुप ऑफ होटल्स के गजनेर पैलेस

को 'बेस्ट हेरिटेज होटल' के सम्मान से नवाज़ा गया। सम्मान पर्यटन और संस्कृति मंत्रालय के राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) प्रहलादसिंह पटेल ने एचआरएच ग्रुप के एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ को प्रदान किया।

स्प्लिट एसी लॉन्च

उदयपुर। दायकिन एयर-कंडीशनिंग इंडिया प्राइवेट लि. (डीएआईपीएल) ने दायकिन की 95वीं वर्षगांठ के अवसर पर भारतीय उपभोक्ताओं के लिए 16,400 रुपये प्लस टैक्स का स्प्लिट एयर कंडीशनर लॉन्च किया है, जिसकी संकल्पना और निर्माण भारत में ही स्वदेशी तकनीक से किया गया है। इस नाते यह भारत की हीटिंग, वेन्टीलेशन और एयर-कंडीशनिंग इंडस्ट्री में महत्वपूर्ण बदलाव लाने की योग्यता रखता है। एमडी और सीईओ, दायकिन इंडिया, के. जे. जावा ने कहा कि इन दिनों कार्यालयों और घरों में 100 वर्ग फुट जगह होना बहुत ही आम बात है। इसी को ध्यान में रखते हुए लॉन्च किया गया दायकिन एसी उपभोक्ताओं के इस उभरते वर्ग के लिए प्रस्तुत किया गया है और प्रत्येक आम आदमी की कॉम्पैक्ट कूलिंग की जरूरतों को पूरा कर सकता है।

गांधी : लोकमन का.....

(पृष्ठ एक का शेष)

गांधी की लड़इया में जीते न फिरंगिया
चाहे कर केतनो उपाउ
हम तो चरखा से लेवैं सुराज
हमार कोई का करिहे !

कितना दमखम है इस लोकशक्ति में ! कितना जोश है इस लोकचेतना में ! कितनी आग और जाग है इस लोकमनसा में ! गांधीबाबा का हुकम होना चाहिये। उसके हुकम में दुनियां चलती है। 'नवा रे घर को नवा रे थुनिया। गांधीबाबा के हुकम में चले रे दुनियां'। छत्तीसगढ़ी लोकगीत की यह पंक्ति कितनी टंच है !

हरियाणा, पंजाब, भोजपुर, संथाल, मणिपुर जहां भी चले जांय गांधी की मनसा को इन लोकगीतों ने विविध भावों में उगेरा है। उनके स्वराज्य आन्दोलन की पूरी पीठिका को अभिव्यक्त किया है। उनके सपनों का सही चितराम दिया है और इन गीतों से जो वातावरण गांव-गांव घर-घर बना उसी ने गांधीजी के आन्दोलन को अग्नि की तेज धार दी और अंग्रेजों को भारत छोड़ने को विवश किया।

एक भोजपुरी लोकगीत में तो कृष्ण और गांधीजी की बड़ी ही सुन्दर तुलना की गई है। उसमें कहा गया है कि कृष्ण तो जेल में पैदा हुए मगर गांधी का तो घर ही जेल हो गया। कृष्ण ने मधुर मुरली बजाई तो गांधी ने मस्ताना चरखा चलाया। कृष्ण माखन चोर कहाये तो गांधी नमक चोर। गांधी और कृष्ण के युग में जितनी दूरी है उतना ही फर्क उनके कर्म-उपादानों में है। ये उपादन अपने-अपने युग के असल सत्य को प्रकट करने वाले इतिहास प्रकरण हैं।

गांधीजी शान्ति की खोज में कभी हिमालय नहीं भटके। वे सारे देश में पूरे लोक में शान्ति चाहते थे। अपनी मृत्यु के एक दिन पूर्व 29 जनवरी 1948 की प्रार्थना सभा में उन्होंने कहा था- मैं शान्ति तो चाहता हूं मगर हिमालय जाकर नहीं। मेरा हिमालय यहां है। मैं अशान्ति में शान्ति चाहता हूं। नहीं तो उस अशान्ति में मर जाना चाहता हूं। सत्य भी है, महत्व भी उसी शान्ति का है जो अशान्ति के बीच प्राप्त होती है। जब सारा देश अशान्ति में हो तब उसे छोड़कर कहीं दूर शान्त जगह जाकर शान्ति पाने वाला क्या उपलब्धि देगा।

गांधी समग्र मानवता का मसीहा था। उसकी समग्र लड़ाई मानवता की लड़ाई थी। उनका लक्ष्य हिन्दुस्तान की आजादी ही नहीं था। वे तो विश्व बन्धुत्व की भावना को अपने जीवन का चरम लक्ष्य मानते थे। देश की स्वतंत्रता के बाद गांधीजी हमारे जितने आदर्श होने चाहिये थे हमने उतना ही उनको विस्मृत कर दिया। इसलिए हम भटकते रहे और जो सुन्दर कल्पना हमारी अपने देश के प्रति थी वह धूमिल होती गई। यही कारण है कि आज हर क्षेत्र में, चाहे वह परिवार का हो, व्यक्ति का हो, समाज या राष्ट्र का हो गांधी का कहा, किया, बताया ही हमें एकमात्र विकल्प लगता है और यही विकल्प हमारा कल्प भी है। अब हमारे लिए गांधी व्यक्ति नहीं, विकल्प है।

-डॉ. भानावत द्वारा संपादित 'एक ही विकल्प गांधी' (1979) से।

जिंक फुटबाल अकादमी के खिलाड़ी चमके उदयपुर लगातार दूसरी बार बना राजस्थान चैम्पियन

उदयपुर। उदयपुर ने फाइनल में हनुमानगढ़ को 3-0 से हराकर लगातार दूसरी बार राजस्थान राज्य अंडर-14 स्कूल फुटबाल चैम्पियनशिप का खिताब जीत लिया। सवाई माधोपुर जिले में आयोजित इस टूर्नामेंट में उदयपुर की टीम में जिंक फुटबाल अकादमी के सात खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया। उदयपुर की टीम में साहिल पुनिया, जंगमिनथांग होआकिप, स्वप्नजीत बर्मन, सुनील पटेल, डेनियल चोड़े, अभिषार तिवारी और बालाकृष्णन मीणा शामिल हुए।

फाइनल में उदयपुर की टीम ने 3-0 से जीत हासिल की। मैच में जिंक फुटबाल अकादमी के फारवर्ड जंगमिनथांग होआकिप ने दो गोल किए जबकि मिडफील्डर स्वप्नजीत

बर्मन ने एक गोल किया। समूचे टूर्नामेंट के दौरान शानदार खेल दिखाने वाले होआकिप को प्लेअर ऑफ द टूर्नामेंट चुना गया। अपने शानदार प्रदर्शन की बदौलत जिंक फुटबाल अकादमी के खिलाड़ी राजस्थान में फुटबाल के स्तर को ऊंचा उठाने के प्रयास में जुटे हैं। हिंदुस्तान जिंक द्वारा चलाई जा रही इस अकादमी के खिलाड़ी अपने लक्ष्य को हासिल करने के लिए जोरदार मेहनत कर रहे हैं।

मुख्य कोच सुरेश कटारिया ने कहा कि मुझे उदयपुर को लगातार दूसरी बार चैम्पियन बनते देखना अच्छा लग रहा है। मुझे इस बात का और अधिक गर्व है कि इस खिताबी जीत में जिंक फुटबाल अकादमी के खिलाड़ियों की अहम भूमिका रही। हमारे खिलाड़ी काफी प्रतिभाशाली हैं और यह जीत उन्हें नई ऊंचाइयां छूने के लिए प्रेरित करेगी।

नारायण सेवा द्वारा अफ्रीका में कृत्रिम अंग मापन शिविर आयोजित

उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान ने दिव्यांग लोगों की सेवा के लिहाज से 'इंडिया फॉर ह्यूमैनिटी' कार्यक्रम के तहत 13 से 22 सितंबर कृत्रिम अंग मापन शिविर के लिए अफ्रीका टूर का आयोजन किया। नारायण सेवा संस्थान के अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने कहा कि अफ्रीका सेवायात्रा के दौरान पेशेवरों की एक टीम ने निशुल्क सुधारात्मक सर्जरी के साथ-साथ कृत्रिम अंगों के वितरण के लिए दिव्यांग लोगों के शरीर का नाप लिया। टीम ने मोम्बासा में 89, नैरोबी में 22 और लेनियाशिया में 8 ऐसे लाभार्थियों की पहचान की है, जिनमें सुधारात्मक सर्जरी की

संभावनाएं हैं। टीम ने मोम्बासा में 190, नैरोबी में 114, डरबन में 55 और लेनियाशिया में 16 लोगों की जांच की और उन्हें कृत्रिम अंग और कैलीपर्स वितरित करने के लिए चुना। इस दौरान दिव्य हीरोज की टीम ने भी नृत्य, रैंप वॉक और स्टंट करके अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। कैंप और दिव्यांग टैलेंट शो 13-14 को केन्या के मोम्बासा में, 15 को नैरोबी में, 21 को दक्षिण अफ्रीका में और 22 सितंबर को लेनियाशिया में आयोजित किया गया। मोम्बासा सीमेंट्स लिमिटेड के साथ कई स्थानीय संगठनों ने अफ्रीका के दिव्यांग लोगों को लाभ पहुंचाने के लिए संस्थान के साथ भागीदारी की।

एमएमपीएस को बेस्ट स्कूल अवार्ड

उदयपुर। शिक्षा के क्षेत्र में एशिया में अग्रणी मैगजीन समूह एजुकेशन वर्ल्ड द्वारा द लीला

एंबिएंस, गुरुग्राम में आयोजित भव्य समारोह में महाराणा मेवाड़ पब्लिक स्कूल के प्राचार्य, संजय दत्ता एवं प्रधानाध्यापक डॉ. बृजराजसिंह बाघेला को प्रधान सचिव (शिक्षा), महाराष्ट्र सरकार नंदकुमार ने सहशिक्षा के क्षेत्र में राजस्थान में चौथे व उदयपुर में प्रथम स्थान के अवार्ड से सम्मानित किया। अवार्ड सह शैक्षिणक वर्ग में बालक व बालिकाओं को विशेष अवसर प्रदान करने, बालिकाओं के सर्वांगीण विकास हेतु किए जा रहे प्रयासों तथा विरासत संरक्षण के प्रयासों के मापदंडों पर शत-प्रतिशत रहने पर प्रदान किया गया।

छात्रों ने लहराया परचम

उदयपुर। दिल्ली मेडिकल कॉलेज एम्स में पल्स-2019 प्रतियोगिता का आयोजन 16 से 23 सितम्बर तक किया गया। इसमें पेसिफिक इन्स्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइन्सेज (पीआईएमएस), उमरड़ा, उदयपुर के छात्रों ने परचम लहराया। दिल्ली एम्स पल्स-2019 प्रतियोगिता एशिया की सबसे बड़ी कॉलेज स्तरीय खेल प्रतियोगिता है। प्रतियोगिता में देशभर के 400 मेडिकल कॉलेज के छात्रों ने भाग लिया।

पीआईएमएस के चेयरमेन आशीष अग्रवाल ने बताया कि पीआईएमएस के अंतिम वर्ष के मेडिकल छात्र महेश भाकर ने एथलिट ऑफ टूर्नामेंट पल्स-2019 का खिताब अपने नाम किया। इसके अलावा महेश भाकर ने 100 मीटर रेस में स्वर्ण पदक, 200 मीटर रेस में रजत पदक, लम्बी कूद में स्वर्ण पदक, 4 गुना 100 रिले में रजत पदक, 4 गुना 200 रिले में स्वर्ण पदक और 800 मीटर रेस में कांस्य पदक प्राप्त किया। इसके अलावा विनय घोति ने कैरम में अपने मेडिकल कॉलेज का नाम रोशन किया है।

जय हिन्दी महान

-हरमन चौहान-

उनके दफ्तर में इक्के-दुक्के पत्र
हिन्दी में आते हैं
हिन्दी में जाते हैं
वे अंग्रेजी में शर्माते हैं
हिन्दी पर गर्माते हैं।
बरसात के मेढ़क की तरह
हिन्दी पखवाड़े के दौरान
हिन्दी-हिन्दी टर्राते हैं।
साल भर अंग्रेजी में बतियाते हैं।
हिन्दी समर्थक
कर्मचारियों पर गुर्राते हैं।
जांच समिति के सदस्य
जब भी आते हैं तब
दूसरे दफ्तरों से पोस्टर, नेमप्लेट्स
बैनर मंगवाकर
सदस्यों को दिखाते हैं
हम अपने कर्मचारियों से
हिन्दी में कितना
काम करवाते हैं?
फिर उनके लिए
फाइव स्टार होटल में
लन्च, डीनर देकर
उन्हें विदेशी आयटम
प्रेजेन्ट करते हैं।
अंततः राजधानी जाकर
'राजभाषा-शील्ड'
ठाठ से ले आते हैं।
वे और ये
बड़े गर्व से गर्माते हैं-
हम हिन्दी के सेवक हैं।
हिन्दी में ही काम
करते और करवाते
हिन्दी को महान बनाते हैं।

हृदय का जटिल ऑपरेशन

उदयपुर। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (पीआईएमएस), हॉस्पिटल, उमरड़ा में चिकित्सकों ने एक मरीज के हृदय का जटिल ऑपरेशन किया है।

पीआईएमएस के चेयरमेन आशीष अग्रवाल ने बताया कि मावली के मोरड़ी गांव निवासी शंकर (30) को सांस में तकलीफ और घबराहट की समस्या के कारण पीआईएमएस में भर्ती कराया गया। जांच से पता पड़ा कि उसके दिल से निकलने वाली मुख्य धमनी फूलकर गुब्बारे जैसी हो गई थी जो कभी भी फट सकती थी और जिससे उसकी मृत्यु भी हो सकती थी। यही नहीं, उसके दिल के एक वाल्व में बहुत ज्यादा लिकेज थे। इनकी वजह से भी दिनोंदिन उसका दिल कमजोर होता हुआ मात्र 25 प्रतिशत ही काम करने लग गया था।

उसे बचाने का एकमात्र उपाय हाई रिस्क सर्जरी ही था। इस पर डॉ. सुदीप चौधरी, डॉ. राकेश भार्गव, डॉ. शरद चन्द्रिका तथा डॉ. उमेश एवं टीम द्वारा जटिल ऑपरेशन किया गया जो सफल रहा।

हिन्दी दिवस पर विद्वत् सम्मान

हिन्दी दिवस 14 सितम्बर को राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर द्वारा आयोजित स्वर्ण जयंती समारोह में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने अकादमी के लेखक मण्डल के 200 विद्वानों का सम्मान किया।

इनमें जयपुर के डॉ. संजीव भानावत तथा उदयपुर के वरिष्ठ लेखक डॉ. राजमल लोढ़ा, डॉ. धर्मवीर वशिष्ठ, डॉ. इन्द्रप्रकाश श्रीमाली, डॉ. कहानी भानावत तथा डॉ. दीपक माहेश्वरी सम्मानित हुए। शब्द रंजन की हार्दिक बधाई।

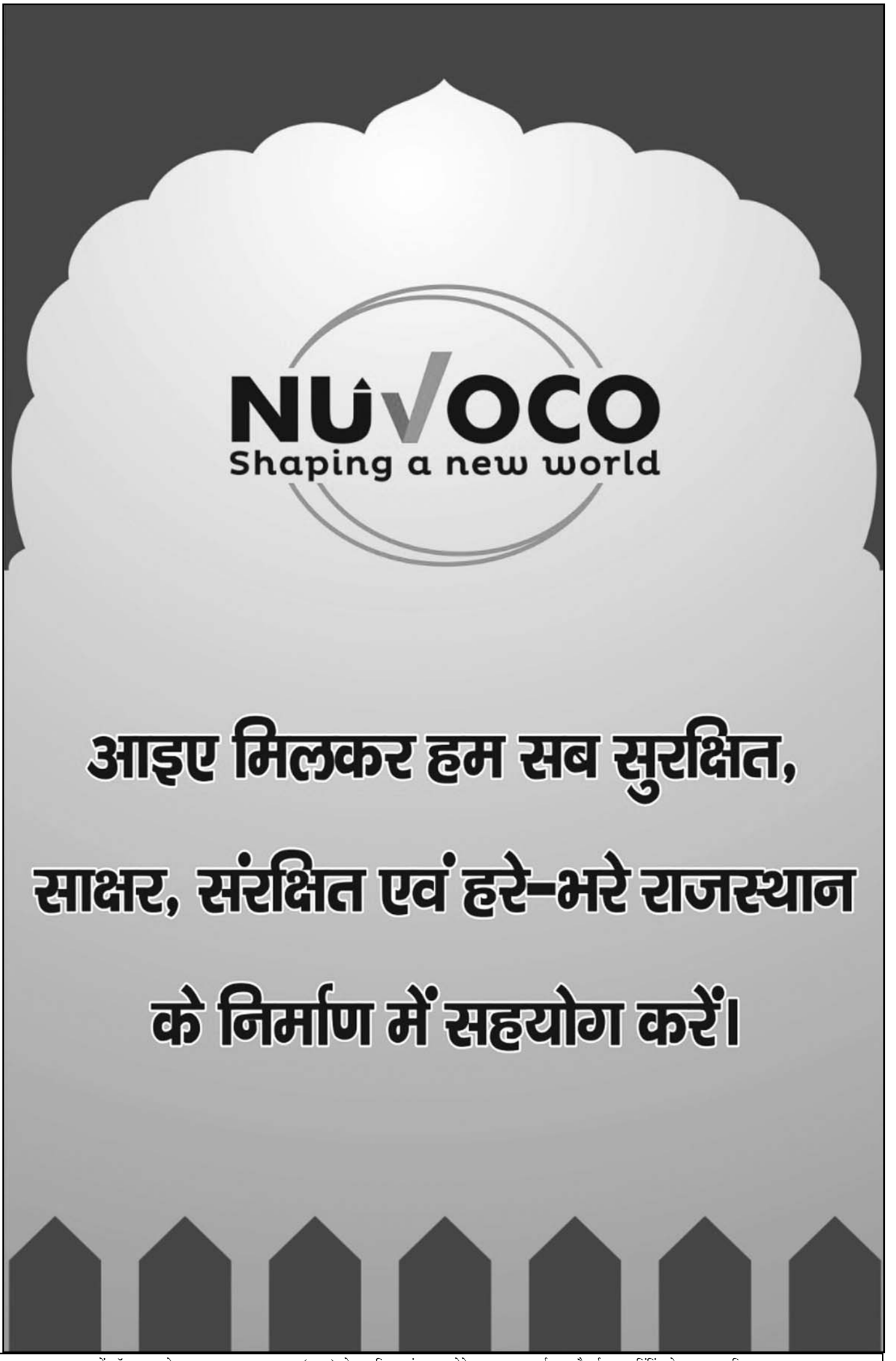

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।